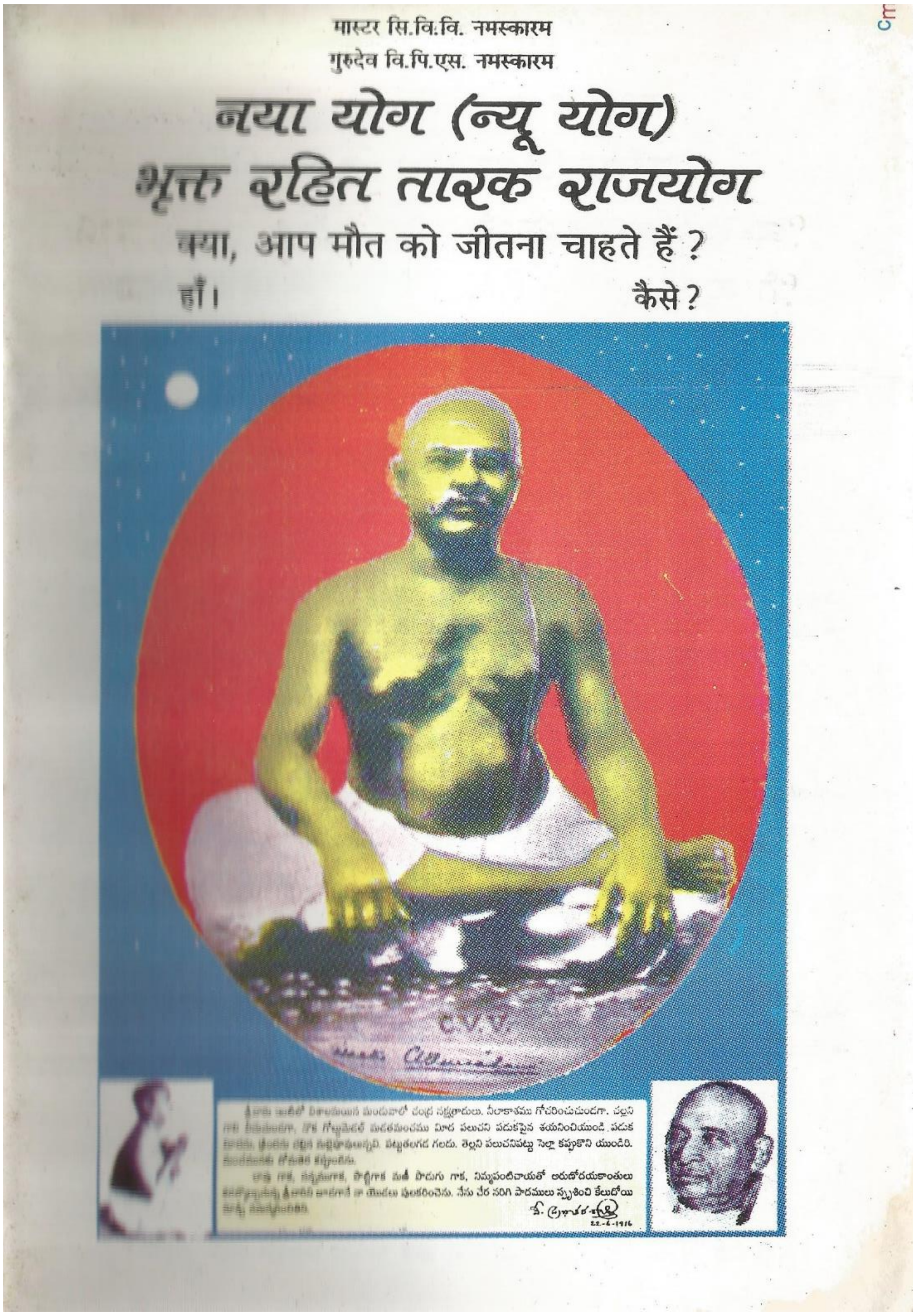
**Naya Yog (New Yog) Bhrukth Rahit Tarak Rajyog**

NYBRTRY Hindi



1

मास्टर सि.वि.वि. नमस्कारम
गुरुदेव वि.पि.एस.नमस्कारम

# "मीडियम्स को आरिजन की वार्निंग"

'एम.टि.ए.' ने निम्न लिखित सूचनायें 'मीडियम्स' के सभी लोगों को दे दीं हैं।

आप सब लोग कोई एक निर्णय करके अपने शरीर के भीतर होनेवाले परिवर्तनों पर ध्यान दीजिए।

जैसे भूख बढती-घटती रहती है, वैसे प्रत्येक जन्म में पाप-कर्म का मेल-मिलन व वृद्धि-ह्रास होता रहता है। पूर्वजन्म के पाप कई पाप-पूर्ण चिंतनों को जागृत करते रहते हैं। उनके दूर होने पर हमरी भलाई (कुशल) का मौका मिलता है।

भूतकाल,वर्तमानकाल, भविष्यत्काल की मार्ग-प्रणाली इस "क्रियेषन" में ही(इसी जन्म में) शास्त्रीय विधि से अवगत हो जाती है। बुद्धि तीन प्रकार की होती है-एक(मैन्ड)बुद्धि; दूसरी (इंटलेक्चुयल) विवेक; तीसरी (आस्ट्रल)सूक्ष्म शरीर भूत बुद्दि। इनकी अनुमति आवश्यक है। पहली से "नो"(नहीं), दूसरी से "यस" (हाँ); तीसरी से "नाट"(नहीं है) जैसे; विषय मालूम होते हैं।

पहले आप सब लोग मेरा कहना, श्रद्धा से सुनिए। आप ऐसा मत सोचें कि एम.टि.ए. दे रहे हैं। यदि आप वैसा सोचेंगे, तो आप में उल्टे(विरुद्ध) भाव आएँगे। आपको दृढ निश्चय से रहना चाहिये कि यह हमें "वन पायिंट" दे रहा है। लेकिन आप की बुद्धि को उस प्रकार का दृढ निश्चय नहीं है। इसलिए आप सभी दृढ निश्चय से रहें।

क्या, यह मानव शरीर दृढ है? क्या आस्ट्रल शरीर दृढ है?

(अपने शरीर)के लोयर-अंदर -और ऊपर के भाग में भी परीक्षा करते समय ऊपर के हिस्से में मरा हुआ 'फिजिकल बाडी' दिखाई पडी। झट मैं ने सोचा-''आस्ट्रल बाडी' नीचे क्यों उतर आई?'

झट मुझे एक प्रत्युत्तर मिला-''विश्व में कहीं भी दृढ निश्चय नहीं है। अतः(यह)ऐसा घटा, पुनः 'अप्पर पोर्षन' में (मैं) देखने लगा। वैसा देखने में सारी बातें मुझे मालूम होगईं।'' पुनः ऊपर से ऊपर तक सिलसिले से(क्रमशः) (मैं ने)देखा। इसलिए पथ बनाकर लौट आया। मुझे अपने मास्टर को प्रत्युत्तर देना चाहिए। इसलिए मैं लौट आया। मैं ने अपने गुरुजी से दो सवाल किये। अचरज की बात है-'झट(मैं ने) एक उत्तम 'क्रियेषन' को देखा। यह बडे आश्चर्य का विषय है। ऐसे अचरज की बातें स्वयं अपनी आँखों से देखने केलिये आपको भी सामर्थ्य दूँगा। जो इस सोसैटी(संघ) में शामिल होने पसंद करेंगे, उनको-एम.टि.ए. सूचनाएँ(मार्गदर्शक बातें)देंगे। ''मैंड, इंटलक्च्युयल और बुद्धि को ऐसी ताकत आ गई और भी उन्नति के लिये आवश्यक ''पवर्स'' दृढनिश्चय से 'प्राक्टीस' करने के कारण मैं पा सकता हूँ।

मैं ने सि.वि.वि. को आज्ञा दी है कि वे आपको भी सभी(विषय) बतावें। आप सभी बातें जान लें।

आप अपने मास्टर को कमकर के मत देखें। उनको महान समझकर उनकी इज्जत करने पर सारे विषय आपको मालूम होंगे-सत्य समझ में आयेगा।

मैं ने आपको 'पर्मिषन'(अनुमति) नहीं दी-''आप अपने गुरु को कमकर के देखें। आप सभी को अपने गुरु के बराबर बनने का या अपने मास्टर से ऊंचे स्तर पर रहने का, आप को किसी प्रकार

की अनुमति(पर्मिषन);-मैं ने नहीं दी।

अपने गुरु को अपने से ऊँचे स्तर पर-सा मानकर पूजा करने से ही आपकी बढती होती है। ऐसा नहीं हो, तो इस योग में शामिल होने के पूर्व की दशा- स्तर- को आप का पतन हो जायेगा। आप नौकरी या ओहदे में चाहे, बडे ही क्यों न हो?(लेकिन) योग में नहीं- सावधानी से अपने गुरु को उन्नत स्थान देकर पूजा कीजिए। नहीं तो, आप का पतन निश्चित है।(म.ले. ता.१५-१-१९११)

इसलिए कोई भी सि.वि.वि. के सिवा(अतिरिक्त)किसी को भी ''मास्टर'' न कहे, और न छापे-वैसा कहे या लिखे, तो ऐसा करने वाला और उसका परिवार, हमेशा खुले दर्वाजेवाले नरक में 'राकेट' -सा प्रविष्ट हो जायेगा। फिर मानव जन्म न पाएँगे। मास्टर सि.वि.वि. के द्वारा प्रतीक्षा की गई 'एटर्नटी' को इसी शरीर से, इसी जन्म में नहीं पा सकेंगा। धोखेबाज और अयोग्य व्यक्तियों की बातें मानकर सभी को(जिस किसी को) ''मास्टर'' कहकर न पुकारे-न लिखे- होशियार रहे।''

# विषय सूची



---

गुरुदेव श्री वेटूरि प्रभाकर शास्त्री जी

मास्टर सि.वि.वि. नमस्कारम
गुरुदेव वि.पि.एस. नमस्कारम

# नया योग(न्यू योग)
# भृत्क रहित तारक राजयोग

## क्या, आप मौत को जीतना चाहते हैं?

हाँ। कैसे?

### 1. यह न्यू योग क्यों?

एक 'अणु' इस मानव शरीर के बनाने का कारण होता है। वह अणु कई जन्मों से कई प्रकार के पापों को ढोता हुआ; आकर इस जन्म में बीमारियों और तकलीफों के रूप में सताया जाता है। इन पुराकृत पाप संबंधी बीमारियों को चिकित्सक नहीं पहचान पा रहे हैं। चिकित्सा भी नहीं कर सकते हैं। जन्मजन्मांतरों से इकट्ठे हुए कर्म को हटाना, कर्म व्याधियों को और कष्टों को दूर करना और मनुष्य को मृत्यु से मुक्त करना, उसके बाद 'एटर्नटी' को प्राप्त करने-सा बनाना इस योग के मुख्य उद्देश्य हैं।(दे. म.ले. पु.१००-१०६)

संसार में 'आटमिक फिजिक्स'१९४१ में, 'न्यूक्लियर फिजिक्स १९६१' में, 'क्वांटम फिजिक्स' १९९०(ये सभी करीब) में प्रकाश में आये।

अणु के बारे में 'अमेरिका', 'जापान', 'जर्मनी', 'इटली' रास्ट्रों में प्रयोग शुरू हुए। इस में 'अमेरिका' का 'रेमंड डाविस जूनियर', 'जापान' का 'मसतोसि कोषिबा', 'कार्ल सागेन', 'ऐनस्टीन(१९२१)', 'नील्स

बोर(१९२२)', 'माक्स फ्रांक(१९१८)' और भी 'रिकार्डो जिकोनि', 'आर्थर क्लार्क', 'एर्विन श्रडिंगर', 'माक्स बोर्न', 'हैजन बर्ग', 'पाल डिरक', 'रिचर्ड फैनमेन' आदि सज्जन भी हैं। इन में कई सज्जन 'नोबल' पुरस्कार पाये हए हैं। ये सभी अणु के बारे में खोज करनेवाले ही हैं; लेकिन किसी ने भी इस कर्म संबंधी मानवजन्म का कारण प्रायः अणु-सा न बताया है।

'अमेरिका' के अध यक्ष 'बिल क्लिंटन' के तकनीकी सलाहकार डा. कृष्ण आर.द्रोणंराजु ने १६.१.२००१ में 'ईनाडु'-तेलुगु दैनिक (हैदराबाद) के इंटर्व्यू में कहा। ''अणु को परिष्कृत करते तो मनुष्य मौत को जीतकर अमर बनकर जिंदा रह सकता है''- मेरा विश्वास है कि ये बातें मास्टर जी की रचनाओं को देखकर उन्हों ने वैसा कहा होगा।

'बिल क्लिंटन' ने कहा-''यह हमारे नहीं; बल्कि हमारे लोगों एवं संसार के लिये भी उपयोगी होगा''

कुछ समय के पहले हैदराबाद में ''जेनोम प्राजेक्ट'' के श्री गणेश में आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री 'श्री नारा चंद्रबाबु नायुडु ने भी उपर्युक्त विषय को अपने भाषण में बताया।

मास्टर सि.वि.वि.जी ने १९१० ईं. में ही कहा-''अणु मानव जन्म का कारण है। उसे सुधारते तो मानव मौत को जीतकर इसी हाड-मांस से भरे शरीर से शाश्वत जिंदा रह सकेगा।'' १९१० में जिन विषयों को मास्टर जी ने जानकर लिखा, उन्हीं बातों को साठ साल के बाद वैज्ञानिक कह रहे हैं। अणु को सुधारने पर मानव मौत से विमुक्त हो सकेगा। मास्टर जी के पहले किसी ने इसे नहीं कहा- ऐसी मेरी भावना है।

१९३० के आसपास सर्कारी गणना के अनुसार औसत मानव की आयु १६ से ३० साल तक-सी मालूम होती है। मास्टर जी ने कहा कि मैं ने अपने मंत्रों को विश्व में बिखेर दिया, वे काम कर रहे हैं। यह अमृतवर्षा, मानवों के अनजान में ही, उन पर पडने से आज के मानव के आयुः-प्रमाण औसत ६० से ८० तक बढ गया।

इस से मालूम होता है कि न? -मास्टर सि.वि.वि. ने १९१० (के) तक ही सिरजनहार से कितनी उन्नति पायी है।

सच पूछा जाय तो मास्टर सि.वि.वि.जी को नोबुल पुरस्कार से भी महान पुरस्कार देना था। ये सारी बातें संसार नहीं जानता; अतः पुरस्कार न दिया गया। सारे मानव मौत को जीतें-इस प्रकार पहले पहल बतानेवाले सि.वि.वि.जी को पूर्णतः सम्मान न देना हमारी गलती है न?

मास्टर जी के प्यार से आप सब लोग उन्नत होकर 'एटर्निटी' कमाने केलिये लायक बनेंगे; जब कि आप सब क्रम का भंग किये बिना, लगातार, पूर्ण भक्ति के साथ दस साल तक प्रार्थना करेंगे।

प्राचीन योगों के द्वारा न पाये जानेवाली अपूर्व सिद्धियों और शक्तियों को इस योग के द्वारा आप प्राप्तकर सकेंगे, इनके अलावा स्वप्न में भी कल्पना तक न कर सकनेवाली बातें घट सकती हैं- वह, यह है कि हाड-मांस से भरे हुये यह शरीर, बेहोश हुये बिना, सचेतावस्था में इस शरीर का नष्ट न होने देना है, याने 'एटर्नटी' पाना है(सलाह मास्टर सि.वि.वि. १७.१२.१९१७)

''मास्टर सि.वि.वि.''-बोलकर प्रार्थना करनेवाला, चाहे खुराक-भोजन-कम करें, तो भी कमजोर नहीं होता, उनके शरीर के

सारे अंग ठीक-ठीक काम करेंगे, वे न गलेंगे न घटेंगे, ३० वर्ष वाले नौ जवान जैसा रहेंगे। संयमी रहते हैं(अपने को काबू में रख लेते हैं) उनके विचार सही काम करते हैं, वे जिस काम की इच्छा करते हैं, वह सफल होती है। मास्टर जी की ओर से, उनके मुँह से 'हाँ' निकलने पर संभव होना, 'नहीं' कहने से उसका असंभव होना- होता रहता है।(दे. पु.४५२)

इस योग का प्रारंभ निम्न लक्ष्यों की पूर्ति केलिये हुआ है- हाड-मांस से बने हुए यह मानव शरीर नष्ट न हो, नवग्रहों के अधिकार के मातहत न होकर जीवन बिताने केलिए, यह स्थूल शरीर, बेहोश न होकर, सचेतावस्था(होश) में ही हमारे शरीर में दिन ब दिन (अपने में) होनेवाले परिवर्तनों को क्रमशः जानने के लिए, सम्पूर्ण आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए।

इस सृष्टि के छिपे रहस्यों और कारणों को जानना, याने विश्व का आविर्भाव क्यों और कैसे हुआ? आदि बातें सरल पद्धति से शिक्षित और अशिक्षितों को, अमीर और गरीबों को, चाहे जो भी हो- गृहस्थी में रहते ही सारी बातें जानने केलिए, बीमारी, बुढापे, मौत के बिना सुख और आनंद से जीवन बिताने केलिए, हम ही नहीं; हमारे सभी नातेदार भी इसका फल भोगने के विचार से;- इस योग की शुरूअत हुई।

किसी प्रकार के अपवाद के बिना संसार के सारे मानव सचेत होकर(होश में) ''कुंडलिनी'' की दिव्यशक्ति के द्वारा अपने में छिपे हुए उस भगवान के दर्शन कर के, शंकाओं को अपनी अंतरात्मा की शक्ति के द्वारा निवृत्त कर लेने केलिए-इस योग का प्रारंभ हो गया।(१-७-१९१० इंडिपेंडेन्स डिक्लरेषन)

इस योग मे ६ प्रकार के ठेके (कांट्राकट्स) काम कर रहे हैं

१. अनंत प्राणशक्ति देना।

२. सचेतन-(होश में)स्थिति में ही, इसी जन्म में, अनंत प्राणशक्ति देना।

३. हाड-माँस से बने इस शरीर का नाश न होना।

४. इस शरीर की आकृति का परिवर्तन न होना।

५. मरे हुए लोगों को सशरीर आमंत्रित करना(बुलाना)

६. भूत-भविष्यत-वर्तमान के सभी विषयों को जानना-याने माया पर विजय पाना (माया उत्थान को रोकने वाली है)(दे. पु.४१७. ता.३०.११.१९२०)

## २. न्यू योग का मतलब क्या है?

भक्ति-श्रद्धा से, होशियारी से(इसयोग के) ''रूल्स-रेग्युलेषन्स'' के अनुसार एकाग्रता के साथ अंतरात्मा को परखते हुए प्रार्थना करनेवाले लोगों को यह योग अमरत्व(शाश्वतत्व) प्रदान करता है।

१.७.१९१७ ई. में मास्टर सि.वि.वि.जी ने -''योग'' शब्द का विवरण दिया-''योग का अर्थ है; एक प्रकार का 'इन्नर डेवलपमेंट्।' (अंतरात्मा की एक प्रकार की उन्नति या विकास) इसका मतलब है-मेडिटेषन(ध्यान; ध्यान के द्वारा फुर्तीलापन'')

सृष्टिकर्ता ने इस योग को ''भृक्त रहित तारक राजयोग'' का नाम दिया। इस का अर्थ है-'भृक्त'-छिपा हुआ(गुप्त), आँखों को न दिखाई देने वाला-वह है पिछले जन्म के(हमारे)काम-काज; 'रहित' शब्द का अर्थ है- हटाना, 'तारक'-श्रेष्ट, राजयोग का मतलब है सन्यास लिये बिना गृहस्थ में ही(घर में रहते हुए) इस योग का

अभ्यास करना।

पुराने जमाने में ६४ योग थे, यह योग ६५ वाँ है। पैंसठवें योग के होने के कारण इस का नाम रखा गया-'न्यू योग'-इस योग संबंधी सारी बातें वैज्ञानिक('सैंटिफिक') विधि से बताए जाने के कारण इसे सैंटिफिक योग भी कहा गया(दे. 'इंडिपेंडेन्स डिक्लरेषन' ता.१-७-१९१० ई. और 'महात्मा लेटर्स' भाग.१-३)।

उपर्युक्त नामों के अलावा यह योग 'कुंडलिनी योग', 'सत्य योग' एवं 'प्राक्टिकल योग' भी कहा गया। 'पतंजलि' ने इस राजयोग को 'अष्टांग योग' कहा।

हमारे, जन्म लेते समय प्राणशक्ति(स्टेबिलिटी) इस शरीर में वायु के रूप में प्रविष्ट होती है। उस वायु की स्थिति जब तक शरीर में रहती है, तब तक मानव जिंदा रहता है। प्राणवायु जब शरीर को छोडकर जाती है, तब मौत होती है। प्राणवायु शरीर की नसों के द्वारा घूमती रहती है। आज की नसें फट जानेवाली हैं। उनके फटने के कारण ही मौत होती है।

लेकिन इस प्रार्थना करनेवालों की आज की नसों के बीच में 'ट्यूब' जैसी बनती है। यह 'ट्यूब' फटनेवाली नहीं। यह ट्यूब फट्नेवाली न होने के कारण प्राणवायु बाहर न जाकर शरीर के अंदर ही घूमती रहती है, (वैसी हालत में)तब यह शरीर किसी प्रकार के रूपांतर के बिना, हमेशा केलिए, याने 'एटर्नल' रहता है।

## ३. न्यू योग को किसने शुरू किया?

श्री कंचुपाटि वेंकट्राव वेंकासामि रावु जी(मास्टर सि.वि.वि. जी) ने कुंभकोणं मे इस योग का प्रारंभ किया। इनके पूर्वज आन्ध्र प्रांत के

कृष्णा जिले से तमिलनाडु के तंजावूर संस्थान-रियसत-को आ गये। वे 'कुंभकोणम' और 'श्रीरंगं' में बस गये। ४-८-१८६८ मंगळवार प्रातः १०.२० धनिष्ट नक्षत्र के दूसरे चरण में कन्या राशि में श्री सि.वि.वि. जी का जन्म हुआ।

१५००० वर्षों से सि.वि.वि. जी के जन्म कारण अणु मौत को जीतने का प्रयत्न करता आ रहा था। अंत में इस अणु के प्रयत्न को देखनेवाले सृष्टिकर्ता ने प्रस्तुत जन्म में कैसे प्रयत्न से मौत पर विजय पाना?- इसे बताने केलिये एम.टि.ए. नामक महात्मा को भेजा। उस घटना के कुछ ही दिनों के बाद वेंकासामि रावु जी को- 'मास्टर सि.वि.वि.' कहकर पुकारने लगे।

मास्टर सि.वि.वि. जी ने १९१० ई. में ही जान लिया कि इस दुनियाँ में ४४४८ तरह, की बीमारियाँ हैं। वैद्य-विज्ञान आज तक भी संसार की बीमारियों की संख्या निर्धारित नहीं कर सका। मास्टर जी ने १३.८.१९१५ ई में ही 'केन्सर' को योग के द्वारा दूर कर दिया। 'अल्लोपति' चिकित्सा-विधान को उस दिन तक केन्सर शब्द का परिचय नहीं था। ८.१२.१९१० ई में ही मास्टर जी ने मानव शरीर को 'स्कान' कर देखा। स्कान शब्द अंग्रेजी चिकित्सों की दुनिया में १९७० ई. में उपयोग में आया। ४ घटनाओं में(मजरों में) मास्टर जी ने मौत को जीता। आँख संबंधित 'बोल्ताकाषन ऐ' नामक व्याधि को जान लिया। उस व्याधि को करोड हिस्सों में बाँट कर, उस में से एक भाग को लेकर उसको, भी करोड भागों मे बाँट कर उसमें से एक अंश को लेकर उस अंश की चिकित्सा की गयी। इस विषय के बारे में गुंटूर और तिरुपति शहरों के सर्कारी बडे दवाखानों के नेत्र-विभाग के चिकित्सकों से चर्चा की गयी, तो उन्होंने कहा कि अल्लोपति

चिकित्सा विधान में अब तक ऐसी सूक्ष्म से सूक्ष्म चिकित्सा न निकली। शायद २० वर्ष के बाद इस की संभावना हो सके।

## ४. (प्रस्तुत) इस योग का प्रारंभ कब हुआ?

दक्षिण भारत के तमिळनाडु के 'कुंभकोणम' नामक शहर के 'कील डबीर तेरु'(ईस्ट डबीर स्ट्रीट)घर का पुराना नंबर ६४ नया नंबर ६५ में करीब १९०० ई में इस योग का आरंभ हुआ। स्वयं प्राक्टीस करके उन्नति प्राप्त करने के उपरांत मास्टर सि.वि.वि. जी का नाता ३०.५.१९१० ई. रात को ८.३० बजे सृष्टिकर्ता से जुड गया। इसी कारण से उस तिथि को ''लिंक वित आरिजन डे'' कहने लगे।

## ५. इस योग का प्रारंभ कुंभकोणम में क्यों हुआ?

देव और दानवों ने दूध के समुद्र का मंथन किया। उस में से अमृत-भांड निकला। उस अमृत के पीनेवालों की मौत नहीं होंती।

'टेंपुल सिटि' नामक किताब बताती है कि कुंभकोणम में स्थित ''कुंभेश्वर स्वामी'' के मंदिर के निर्माण करते समय वह अमृत-भांड मंदिर के नीचे रख कर मंदिर बनाया गया। अतः उस शहर का नाम ''कुंभकोणम'' पड गया। मौत से छुटकारा पाने के लक्ष्य से इस योग का प्रारंभ वहाँ हुवा।

यही है-मास्टर सि.वि.वि. जी का-''भृक्त रहित तारक राजयोग''.

## ६. प्रार्थना(प्राक्टीस) का विधि-विधान क्या है?

प्रधानतः आप को यह करना चाहिये-आप के शरीर के अंदर कहाँ-कहाँ, क्या-क्या हो रहा है? इस विषय का अनुशीलन हर दिन करना चाहिए। योग साधक नहाने के बाद काई न काई नाश्ता या चाय अवश्य करें या पियें, फिर अपनी सुविधा के अनुसार बैठे।

(अ) इस योग करनेवाले केलिये और प्रकार, की पूजा वगैरह मना है।

(आ) 'गायत्री' को छोडकर अन्य मंत्रों का जप न करें।

(इ) जरूर ४५ 'मिनिट्स'(निमेष) प्रार्थना करनी चाहिए।

(ई) हर दिन तीन दफे प्रार्थना करनी चाहिए।

सबेरे ४ बजे से लेकर ८ बजे के अंदर एक दफा, शाम को ६ बजे से लेकर ८ बजे के अन्दर दूसरा दफा, रात में सोने के पहले और एक दफा। तीसरी प्रार्थना-समय में दिन भर के अपने किये कामों का अनुशीलन करके, उनमें सत्य और धर्म के विरुद्ध कोई काम अपने द्वारा हुवा हो, तो उसे क्षमा, प्रार्थना पूर्वक मास्टर सि.वि.वि. जी से निवेदन करके(बताकर) और भविष्य में अपने द्वारा दोष न होने-सा, (मास्टर जी से)प्रार्थना करनी चाहिये। अवश्य वे माफ करके हमें सुधारेंगे। घडी, देखकर(लोकल टैम) उक्त समय का प्रार्थना-काल-सा रख लें।

(उ) सबेरे चार बजे से शाम को चार बजे तक सूरज; और शाम के चार से सबेरे चार बजे तक चांद-इस संसार का शासन करते हैं।

(ऊ) एक दफे की प्रार्थना एक जन्म के कर्म को हटाती है।

(ऋ) 'रूल्स और रेग्युलेषन्स' का भंग किये बिना कम से कम दस वर्ष प्राक्टीस करने पर बीमारी और बुढापे के बिना शाश्वत जिंदा रहने की ताकत आती है।(दे. मास्टर जी के पूरा साहित्य).

७. मुझे कहाँ(किस स्थान पर) प्रार्थना करनी है?

१. प्रार्थना का स्थल चाहे, बगीचा हो या कमरा हो, वह साफ-सुधरा हो कर हल्की महक से भरा हुआ हो। अपनी सुविधा के

अनुसार ऊपर के दोनों जगहों में कहीं भी प्रार्थना करें।(म.ले.पु.२८)

२. ऐसी जगहों में प्रार्थना न करनी है-गंदी जगहें, बेरहमवालों रहने के यहाँ, जहाँ अनागरिक (असंस्कृतिक व्यक्ति) और नास्तिक रहते हैं। प्रार्थना के कमरे को होशियारी के साथ साफ और सुंदर रखना चाहिये। वहाँ गाढी महक न रहे। हल्की-सी सुंगध जरूर रहे। तभी 'आरा' की उत्पत्ति होगी। वही 'आरा' हमारे पूर्वजन्म के पापों को पचा-नष्टकर-देती है-मतलब है कि जो हजम न होते, उनको हजम कर देती है। उस कमरे में किसी प्रकार की आवाज(ध्वनि) न हो। (म.ले. पु.३)

विशेषतः कहता हूँ कि प्रार्थना के समय में काई आवाज न हो।

३. प्रार्थना के कमरे को जितनी अच्छी सफाई के साथ हम रख सकें, उतनी रखें। तभी 'आरा' की उत्पत्ति होगी। वह आरा हमारे पुराकृत कर्मों, बीमारियों, तकलीफों को 'तीन हजार चार सौ नौ पाइंट्स और पांच शून्य बै नौ'(३४०९.५/९(Three Thousend four Hundred and nine Points five Nots/nine))हटाती है।

४. शराबी, धुवा पीनेवाले('सिगरेट' वगैरह) और अन्य व्यसनी भी, जो अपने जीवन को अच्छे मार्ग पर चलाना चाहते हो(अपने को सुधरना चाहते हो), तो वैसे आदमियों को भी 'आरा' वाले कमरे में आमंत्रित करके रूल्स और रेग्युलेषन्स के मुताबिक प्रार्थना करने के लिए कह सकते हैं। वैसा करने पर उनके शरीर में शक्ति शामिल होती है और वे तरक्की पायेंगे। यह बात उन्हें मालूम होगी।(म.ले. पु.४२३)

५. मेरे 'रूल्स रेग्युलेषन्स' के अनुसार प्रार्थना करनेवालों को देखते ही, उनकी तेजस्विता मालूम होती है। मैं पूछना हूँ कि इस योग में शामिल होने के पहले उन में ऐसी तेजस्विता थी या नहीं?

आप बता दें, तो मैं खुश हूँगा। इसे आप की 'आरा' पर छोड देता हूँ''।(म.ले. पु.५४७)

६. बहुत कम प्रकाश वाले कमरे में ही प्रार्थना करनी चाहिये, वैसी हालत में ही आप कई अजीब(अद्भुत)बातों को देख पायेंगे। प्रकाश में प्रार्थना करें, तो अजीब बातें न देख पायेंगे। इसीलिये बहुत कम प्रकाशवाला कमरा चुना गया।

प्रार्थना कभी भी सीधे खाली जमीन पर बैठ कर न करनी है।

चटाई, या दरी या किसी आसन पर बैठ कर ही करनी है। लोहे पर कभी मत बैठे।

## ८. न्यू योग का 'प्राक्टीस' कैसे करना चाहिये?

तुम्हें निश्चय कर लेना है कि 'मैं जरूर दस साल तक प्रार्थना करूँगा,' मास्टर जी के-'रूल्स-रेग्युलेषन्स' को पूर्णतः पालन करते हुये, पहुँचे हुये व्यक्ति के पास दीक्षा(उपदेश) लेकर प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना के समय अपनी अंतरात्मा का अनुशीलज करे।

'वेब-सैट' की प्रार्थना के द्वारा आप को कोई उन्नति न मिलती, तो निम्न पते पर 'ई-मेइल' से संपर्क करें :

ई-मेयिल:-avsacharyulu@rediffmail.com, webmaster@mastercvv.org.

वे आप की उन्नति का रास्ता बतायेंगें।

१. प्रार्थना के समय के १५ मिनिट्स पूर्व में आकर बैठना चाहिये। बैठकर या लेट कर प्रार्थना की जा सकती है। आते ही मास्टर सि.वि.वि. जी के 'फोटो' को दिल लगाकर देखें; ठीक समय प्रार्थना शुरू करें। अगर आपके सामने 'फोटो' नहीं हो, तो १५ मिनिट्स मन को एकाग्र करके, बाहरी बातों पर ध्यान न देकर;

समय पर प्रार्थना शुरू करें(दै. पु.१३५)।

(निम्न लिखे अनुसार एक ही दफा अपने में स्मरण करके प्रार्थना शुरू करें।)

सद्भावना से प्रार्थना करें।

## प्रार्थना

## 'मास्टर सि.वि.वि. नमस्कारम'

(बार-बार उपर्युक्त प्रार्थना न दोहराना, कभी जोर से मत चिल्लाना)

आपका संकल्प यों होना चाहिये-

**मैं और यह जगत(विश्व) सुखी रहे। पिछले जन्मों का कर्म और इस जन्म का कर्म (मुझ से) हट जावे।**

**मेरे इस जन्म का कारण एक अणु है। वह अणु कई जन्मों के पाप ढोता हुवा, कष्ट और रोग दे रहा है। उस अणु की तृटियों को दूर करके मुझे झट उपशमन दीजिये। मैं प्रार्थना करता हूँ कि 'एटर्नटी' की प्राप्ति अगले जन्म में नहीं, हाड-मांस से भरा हुवा इस जन्म में ही हो।**

**मास्टर जी आप सशरीर आविर्भूत होकर 'एटर्नटी' को इस पृथ्वी पर स्थापित करने केलिए आप से प्रार्थना करता हूँ। नमस्कारम।**

सूचना:-दुर्बल या रोगी व्यक्ति लेटकर इस प्रकार प्रार्थना में कहे-

(१) अपनी बीमारियों के बारे में मास्टर जी से निवेदन करके- "मुझे झट उस से विमुक्ति मिले।"

(२) कमजोर आदमी लेटकर ''मास्टर जी! मुझे 'प्लंटी आफ प्राण' एवं 'विगर सप्लै' प्रदान करें''

९. अंतरात्मा का अनुशीलन कैसे करना?

१. (प्रार्थना के समय) एक अलौकिक दिव्यशक्ति आप के शिर को छुयेगी, वहाँ से शिर के चारों तरफ़ घूम कर आँखों में पहुँचेगी। वहाँ से दाये हाथ की उगलियों के नाखूनों तक जाकर, फिर ऊपर आकर बाये हाथ की उंगलियों की छोर तक पहुँचती है। पुनः वहाँ से लौट आकर हृदय और श्वास-कोश का स्पर्श करके आहार-नाळिका(अलिमेंटरि केनाल)(Alimentary Canal) के द्वारा 'कुंडलिनी' में पहुँचती है। यह 'कुंडलिनी' मूत्र-कोश और पुरीष-कोश के बीच में बडी बारीक होकर रहती है। यह सारी चर्या नसों के द्वारा होती है। यह सारा काम बारीक से बारीक तौर पर संपन्न होता है। हमें बडा सावधान होकर इसे देखना पडेगा। 'कुंडलिनी' से निकलनेवाली शक्ति साधक को झटके देती है; जो सहन के होते हैं। वहाँ से वह शक्ति, दैवी शक्ति के बराबर काम करती है। महात्मा ने सि.वि.वि. जी को अंतरात्मा के परिशीलन का मार्ग बताया।(दे.पु.३५४,३५५,४१४)

२. 'प्राक्टीस' करते समय शरीर के निम्न कहे भागों में भी परखिये- शिर, भौंहें, शिर के चारों तरफ, आँखें, ठोडी, गला, बाहु, हृदय, पेट, आहार-नाळिका(खुराक-मार्ग), गुर्दा(मूत्र-पिंड) रीढ की हड्डी(कमर का बांस) लिंग और पोता।

शिर के ऊपर और नीचे, 'इंटलेक्ट' भाग, हृदय, नाभि, पेट, और बीजों, पोतों में भी पुनः परखिये-

१०. प्रार्थना के आरंभ होते ही क्या घटता है?

मास्टर जी के रूल्स-रेग्युलेषन्स के अनुसार प्रार्थना प्रारंभ करते, तो झट सारे शरीर में एक झटका-सा लगता है। 'वैब्रेषन्स' ३०,००० प्रकार के हैं। उसके उपरांत, इनमें से कोई एक 'वैब्रेषन' आप में होगा। शरीर के झुकावों(भंगिमा) में कई प्रकार के झुकाव आ सकते हैं। कभी-कभी बिजली(षाक) के लगने के बराबर हो सकता है। कुछ साधकों को भूत-भविष्यत-वर्तमान में होनेवाली बातें चित्रपट(सिनिमा) के समान आँखों के सामने दिखाई देंगी। कुछ हिदायतें संकेत के रूप में मालूम होंगी। पूर्ण विश्वास, एकाग्रता के साथ सक्रम रूप(विधान) से प्रार्थना करने पर; होश में रहते हुये ही; उपर्युक्त सभी बातों का अनुभव आप को होगा।

अन्य योगों में चरम सीमा की है-'समाधि स्थिति।' उस स्थिति को प्राप्त किया साधक बेहोश हो जाता है। ऐसी हालत में उस के शरीर के अंदर या उनकी साधना की उन्नति में क्या घटा?- इसे, वह नहीं जानता। होश में आने के बाद वह नहीं कह सकता कि क्या गुजरा?

लेकिन इस योग में उस स्थिति को प्राप्त होने के बाद भी साधक सारी बातें जानता है, देखता है और दूसरों को बता भी सकता है- यही इस योग की खासियत(इस योग पर) तुम पूरा विश्वास करते, तो सारी बीमारियाँ और तकलीफें दूर हो जायेंगी। आप की उन्नति का प्रमाण यह है कि-सारी तकलीफों और अडचनों से विमुक्ति पाना। मास्टर जी ने कहा था-'प्राक्टीस मानव को सुधरेगा।'

प्रार्थना किये बिना, किया-सा(झूट न कह कर); सक्रम विधि से पूर्ण विश्वास के साथ, साफ दिल से प्रार्थना करनी चाहिये। कभी-कभी कुछ व्यक्तियों के पूर्वजन्म के योग-फल से जल्दी से जल्दी उनकी उन्नति होती है।

## ११. इस योग के करने केलिये योग्य(अधिकारी) कौन है?

मास्टर जी की राय में जाति-पांति और देश भेद की गणना किये बिना कोई भी आदमी इस योग करने का योग्य(अधिकारी) हो सकता है। साधक को तय करना चाहिये कि मैं अवश्य दस साल प्रार्थना करूँगा।

निम्न प्रकार के व्यक्ति इस योग केलिये नालायक हैं-

१. आमिष भोजी, शराबी, सिगरेट वगैरह उत्तेजना देने वाले पदार्थों का सेवी, चरित्र हीन, पाजी, उपहास-चिढाने वाला-अविश्वासी, धोखेबाज, कपटी, अशिष्ट, ईर्ष्यालु, जोश में आनेवाला, प्रतीकारे च्छुक, अधर्मी, डींग मारनेवाले।

(दे.म.ले.पु.१८० और कई जगहों मे)

## १२. किसी शुल्क की आवश्यकता है, क्या?

१. दीक्षा या उपदेश केलिये कोई शुल्क नहीं है।

२. कोई चंदा(सबस्क्रिप्षन) भी नहीं है।

३. ट्रीट्मेंट(चिकित्सा) मुफ्त है।

(चाहे; व्याधि शारीरक, मानसिक या भूत-प्रेत आदि का क्यों न हो?

## १३. इस योग के नियम क्या हैं?

१. साधक १२ वर्ष के ऊपर का हो(रोग की चिकित्सा करने केलिये यह नियम नहीं)

२. माँ-बाप के मातहत को, उनकी अनुमति की आवश्यकता है।

३. गृहिणी को अपने पति से अनुमति पाकर आना है।

४. पति-परित्यक्ता, पुनः पति से सहजीवन चाहती हो, तो आकर

प्रार्थना कर सकती है।

५. कन्याओं केलिये माँ-बाप या संरक्षक की अनुमति आवश्यक है।

६. दिवालिया न हो।

७. व्याकुल-चिडाचिडाहटवाला- न हो।(व्याकुलता के दूर होने केलिये आकर मास्टर जी से निवेदनकर सकते हैं।

८. समाज की दृष्टि में 'कुकर्मी' कहलाने वाला न हो।

९. साधक ऐसा निश्चय कर आवे कि जरूर दस साल साधना करूँगा।

१०. गायत्री-जाप के अलावा प्राणायाम और बीजाक्षर जाप न करे।

११. पूजा-पाठ न करे।

१२. 'ओम' या किसी मंत्र का जाप न करे।

१३. तीन मूर्तियों(ब्रह्मा, शिव, विष्णु) से नाता न जोडे।

## १४. (अपनी)बढती/विकास को कैसे जानें?

अपनी बढती आप की माँगों(चाहों) पर निर्भर है। मान लीजिये आपने सौ माँगें कीं। उन में दस पूरी हुईं। इस का मतलब है(आप ने इस योग में) १०% सदी बढती पाई है। यदि १०% सफल हुईं, तो आप की बढती १०% हुयी। अतः सौ फी सदी बढती केलिये आप को प्रार्थना करनी होगी और सफलता पानी चाहिये।

१. ''आप की बढती क्रमशः पूरी हुई''-यह कैसे जाने?

'आप के मन के विचारों के कार्यान्वित होने पर-अपनी सोच को काम में लाकर आप के द्वारा की गयी चिकित्सा(ट्रीट्मेंट) के सफल होने पर'।(म.ले.पु.१. पु.२५१)

२. ''आप स्वयं पूर्णतः क्षमता पाकर बीमारियों का इलाज करते,

तो वे सुधर जायेंगे''-यही आप की बढती का सबूत है। इसलिये पहले पहल कर्म-रोगों की चिकित्सा कीजिये (म.ले.पु.२६२-२६३)

मास्टर जी की कृपा से हम बढती पाकर ''हिंटिंग बोर सैट्'' प्राप्त करके अपना क्रमिक विकास पायेंगे।

१५. (आजकल भी)'कोर्सेस, रेग्युलेषन्स, ओलिडियर, ईक्वनाक्स और ब्रीतिंग प्रिन्सिपुल्स' आदि की आवश्यकता है- क्या?

ऊपर कहे हुये कोर्सेस वगैरह को करने की जरूरत, अब हमें बिलकुल नहीं है। क्यों कि सृष्टिकर्ता ने हर एक कोर्स को कितने दफे करने की आवश्यकता है,- इस विषय को मास्टर जी और उनके 'मीडियम्स' को 'कास्मास' में 'वैब्रेट्' करने के लिये, जो आदेश दिया, उसका पालन उन्होंने किया है। इस विषय का उल्लेख मास्टर जी ने अपने 'नोट्स' में किया है।

१. 'वर्किंग' (काम) समाप्त हो चुका है। नतीजे के निकालने के समय की प्रतीक्षा में है। इस में शंका की कोई गुंजाइश नहीं है (नो.भा.२, पु.३६ ता.७-११-१९२०)

२. नोट्स में और एक जगह बताया गया-

(अ) 'प्राक्टीस' के जो नाम दिये गये, वे समाप्त किये गये- मास्टर सि.वि.वि. जी और एम.टि.ए.(के द्वारा)

(आ) मीडियम्स के द्वारा मालूम कर लेना।

(इ) सीधे जान लेना।

उपर्युक्त बातों में (आ), (इ) को अब करना है।(नो.भा.४, ता.११.२.१९२२)

इसलिये आज कल कोर्स वगैरह करने की आवश्यकता नहीं है। इसे न जानने के कारण कुछ लोग अज्ञान से कोर्स वगैरह करते और कराते हैं। इनके रटने से आप को कोई फायदा-प्रयोजन-प्राप्त नहीं होता।

मास्टर जी के 'रूल्स' के अनुसार आप को अपनी प्रार्थना में ''मास्टर सि.वि.वि.''इतना ही कहना(काफी) है। इस के अलावा, इस के आगे या पीछे कोई नाम न मिलाना चाहिये।

'ईक्नाक्स' प्रार्थना को स्वयं मास्टर जी ने न किया और दूसरों को भी न उपदेश दिया। कुछ अनधिकारी और अज्ञानी व्यक्ति 'ईक्नाक्स' को करते हैं और कराते हैं।

१. मास्टर जी ने कहा कि साधक लोगों के पिछले जन्म में पाई हुई बढती के अनुसार, उन लोगों के स्तर के अनुसार(मैं ने उन्हें) उचित 'कोर्स' देकर, उनकी उन्नति कर दी(दे. पु. ३७३)

अब, इस योग में अपना स्तर न जाननेवाले; कोर्स देने के कारण देनेवाले और लेनेवाले कोई फायदा न उठायेंगे।

एम.टि.ए. ने मास्टर जी से ऐसा कहा कि ''अपनी वैयक्तिक उन्नति के लिये 'मास्टर सि.वि.वि.' कह कर प्रार्थना करे'' (दे. पु.५०)

२. और भी एम.टि.ए. ने कहा-''आगे मीडियम्स को प्राक्टीस केलिये देनेवाली कुछ भी नहीं। परंतु प्रातः और शाम को सारे मीडियम्स सत्य के प्रकटित होने तक 'मास्टर सि.वि.वि.' मात्र कह कर प्रार्थना करें। (ता.३०.११.१९२०)

३. ता.८.५.१९१० से लेकर; जब तक सि.वि.वि. जी जिंदा रहें, तब तक उन्हों ने सारे मीडियम्स को प्रार्थना के लिये इतना ही दिया :-''मास्टर सि.वि.वि. नमस्कारम''

(सि.वि.वि. जी के द्वार दिये गये 'इन्सियेषन कार्ड' को देखें)

१६. हिदायतें-मुख्यतः(ध्यान देने की) सूचनायेँ:-

१. ये सारे नियम-रूल्स-लगातार दस साल प्रार्थना कर के बढती पाकर, व्याधियों से विमुक्ति एवं 'एटर्निटी' पाने की चाह रखनेवालों के लिये ही हैं। वह स्वयं बढती पाते, तो दूसरों की बीमारियों को दूर करने की ताकत; मास्टर जी उन को प्रदान करेंगें।

२. 'डाक्टर' लोगों से भी जिन के रोग दूर न किये गये।, वे भी भक्ति और श्रद्धा पूर्ण विश्वास, बडी सावधानी एवं स्वच्छ मन से प्रार्थना करें, तो मास्टर जी झट उन्हें उन रोगों से विमुक्त करेंगे।

३. शराब पीना वगैरह बुरी आदतवालों को; अपनी बुराइयों की माफी करके अपने और अपनों को भी स्वास्थ्य प्रदान की इच्छा प्रकट करते हुये लेख लिखकर दस्तखत कर के मास्टर जी के फोटे के पीछे या पैरों के पास रखकर प्रार्थना करनी चाहिये। यदि फोटो नहीं हो, तो प्रार्थना-मंदिर में मेज पर पत्र रखें। मास्टर जी ऐसे लोगों को भी क्षमा देकर, उनके रोग और कष्ट दूर करेंगे।(दैरी से)

१७. चेतावनी:-

एम.टि.ए. ने कहा है कि इस योग के सभी साधक सहृदयी-प्यार और दयालु- होने के साथ एक ही प्रकार के आशयवाले रहें।

इस योग में 'थाट् पवर' बहुत जरूरी है। उस से भी बढकर अंतरात्मा का अनुशीलन अत्यंत खास बात है। इन दोनों के बिना प्रार्थना करनेवाले कुछ ना पायेंगे।

(अ) आप अपने में घर किये हुये बुरे विचारों को भगाइये। मास्टर जी के रूल्स-रेग्युलेषन्स के मुताबिक प्रार्थना कीजिये। मतलब यह है कि एकाग्रता के साथ अंतरात्मा का अनुशीलन करते हुये प्रार्थना करके बढती-उन्नति-प्राप्तकर मौत पर विजय पाइये (एम.टि.ए.)

(आ) सोचिये-आप से कहे जानेवाले अन्य शब्द आप को ऊँघ(तंद्रा) के बजाय कुछ भी फल देनेवाले नहीं।

(दे.पु.४३७ ता.२०.६.१९२१)

(इ) शब्दों से (लफजों से) आप सतुष्ट न रहें। पर आप 'एटर्निटि' को स्थापित करने-सा रहें। (दे. पु.४४१, ता.२०.११.१९२१)

(ई) एम.टि.ए. के आदेशानुसार बचे हुये सारे आवश्यक शब्द(लफज) बिखेर दिये गये।(४०८. ता.२६.९.१९२०)

(उ) शब्दों के बिखेरने से आप को कोई प्रयोजन या लाभ नहीं होता।

केवल शब्दों से खुशी मत मनावें (एम.टि.ए)

झट कोर्सेस और रेगुलेषन्स बंद कर दें। अयोग्य एवं उन्नति प्राप्त न किये हुये लोगों और मास्टर जी के रूल्स-रेग्युलेषन्स न जाननेवाले अहंकारी लोगों की बातों की परवाह मत कीजिये। उनके कहे अनुसार करते, तो कोई उन्नति नहीं पायेंगे। अपने रोग-कष्टों को न दूर कर सकेंगे। अपने ही रोग-कष्ट न हटा सकनेवाले ऐसे लोग दूसरों का उपकार क्या कर सकते हैं? मास्टर जी के कहे 'मौत से छुटकारा' कैसे पायेंगे?

(अ) ये सारी हिदायतें-मीठी बातों के समान केवल सुनाने केलिये नहीं, काम में लाने केलिये हैं।(म.ले.पु.७२७)

(आ) इस 'सोसइटी' के 'रूल्स-रेगुलेषन्स' के विरुद्ध कोई अपने विचार, मेरे इस योग में न जुडा सकता है।(एम.टि.ए.) (म.ले. पु.६३७)

(इ) मेरे योग केलिये मेरे विचार(रायें) आवश्यक हैं; न कि दूसरों के विचार। (दै.पु.२२२)

(ई) साधकों को गलत रास्ते पर भिजवाने का अधिकार(हक) मैं ने तुम्हें न दिया। अपनी रायें कहने का अधिकार भी तुम्हें न दिया।(एम.टि.ए.)(म.ले. पु.२६४)

उपरोक्त सारी बातें मास्टर सि.वि.वि. जी को एम.टि.ए. के द्वारा दीं गयीं हैं। एम.टि.ए. जी ने स्पष्ट कहा-''कोई परिवर्तन करने-साधकों को गलत रास्ते पर ले जाने का अधिकार सि.वि.वि. जी को ही नहीं है।

मास्टर सि.वि.वि. जी की दैनिकियाँ देखिये। आप को मालूम होता है कि उन के पास आये सभी 'मीडियम्स' को सभी 'कोर्स रेगुलेषन्स' नहीं दिये गये। उन(मीडियम्स)के पिछले जन्म की बढती देखकर ऊपर के 'कोर्सेस-रेगुलेषन्स' देकर उनकी उन्नति करायी-सी मालूम होता है। मास्टर जी ने बताया ''हर एक आदमी ने पिछले जन्म में कई प्रकार के भिन्न-भिन्न पाप करके, अब यह जन्म पाया है। इसलिये सभी के शरीर के तत्व-धर्म-एक ही प्रकार के नहीं होते। अतः सब लोगों को सब कोर्स नहीं दिये गये।(दे.पु.११)

इस योग में सिद्धि न पाये, अधूरे साधकों की बातों में मत फँसें, मत अनुकरण करें। सि.वि.वि. जी को छोडकर चाहे, वह कितना भी बडा क्यों न हो उसे 'मास्टर' शब्द से मत संबोधित करें, मत कहें, मत पुकारें। एम.टि.ए. जी ने स्पष्ट कहा है कि ''मास्टर'' शब्द के - उचित- योग्य केवल 'सि.वि.वि.' जी है; और कोई नहीं।

आखिरकार एम.टि.ए. ने क्या कहा? देखिये-

''मेरे 'रूल्स-रेगुलेषन्स' का पालन न करनेवाले झट इस्तिफा देकर अपने-अपने घर चले जाओ''- इस प्रकार जोर से डांटा।

(म.ले.पु.५५१)

एम.टि.ए. के दिये 'रूल्स-रेगुलेषन्स' की उपेक्षा करने का अधिकार मास्टर सि.वि.वि. जी को भी नहीं, ऐसी हालत में अन्य उपदेशकों को कैसा होगा? ऐसे उदेशक अपने को अधिकारी मानें, तो वह उनका दुरहंकार(घमंड) ही होता।

महात्मा ने कहा है, ''कोर्सेस आदि करने वालों की 'लैफ ग्यारंटि सस्पेंड' किया है।''(दे.दै.)

और भी कहा है कि ''मास्टर जी के रूल्स-रेगुलेषन्स की पर -वाह किये बिना अपनी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करेंगे, तो तुम को 'एटर्निटि' न मिलेगा। कथन है-''गुस्ताखी सहन की नहीं है''। ('डिस ओबीडियन्स केनाट बि टालरेटड्'(Disobedience can not be Tolerated)

अंततोगत्वा स्थिर-प्रशान्त-होकर सोचिये-''आप कुएँ के मेंढक के बराबर 'कोर्सेस' आदि नाम चिल्लाते हुए, बारबार जन्म लेते-मरते, हमेशा के लिये नरकवासी बनना अथवा मास्टर जी के रूल्स-रेगुलेषन्स के अनुसार केवल ''मास्टर सि.वि.वि. नमस्कारम'' (इतना) कहकर प्रार्थना करके बढती(उन्नति)पाकर मास्टर जी की वांछित 'एटर्निटि' को अगले जन्म के बजाय, इसी जन्म में, इसी देह से पाकर सुख और संतोष से जिंदगी चलाना'-चाहते हैं।'' -आप ही खुद तय कर लीजिये।

इस किताब की सारी बातें मास्टर सि.वि.वि. जी के द्वारा लिखे साहित्य के सहारे पर लिखीं गयीं।

१८. ''सि.वि.वि.''-इन तीन वर्णों(हरूफों/अक्षरों)की महत्ता क्या है?

१. भरोसा और दृढ विश्वास एवं भक्ति से अपनी जिंदगी के साथ अपने परिवार की जिंदगी को इस योग के लिये, जो न्योछावर करता है, और करके मास्टर जी की आज्ञा के अनुसार चलता है, उसकी और उसके परिवार की रक्षा ''डैरेक्ट आरिजन लैन'' करता है:-(उपर्युक्त तीन वर्ण)

२. दस साल के अंदर साधक में 'आरा' बाँटने की ताकत आती है। उसके दिमाग में 'लैफ एक्टिविटी फ्लो' काम करती है। उस ताकत की बढती के साथ-साथ वह 'ट्रीटमेंट्स' देने केलिये उस शक्ति का उपयोग कर सकेगा।

३. मास्टर जी साधक से, जो काम करने कहें, 'जहाँ कहीं भी जाकर आदेश के अनुसार करूँगा'-दृढ निश्चय से ऐसा प्रमाण करना चाहिये। साथ ही प्रतिज्ञा लेनी है-अपनी सहूलियत; अधिकार(ओहदा)-मान-मर्यादा-नफा-नुक्सान की गिनती करूंगा।''

४. 'सि.वि.वि.' कह कर प्रार्थना करने से जितनी बढती डेढ साल में होती है, उस की निगरानी करनी चाहिये।

५. 'सि.वि.वि.' कह कर करनेवाली प्रार्थना अंधेरे कमरे मे ही करनी चाहिये। (हमारे)बदन में अत्यंत जोर का 'वर्किंग' होता है। कई प्रकार के झुकाव(पास्चर्स) आयेंगे-उन को परखना चाहिये।

६. पुराने ''मीडियमों'' में 'सैट' याने दिव्यदृष्टिवालों में से इस तरह

प्रार्थना करके बढती केलिये चुन लेना होगा।

तो, (किन्तु)इस प्रार्थना करनेवालों को एक प्रकार की तंद्रा(झूम), प्रार्थना के समय में या इस के बाद आयेगी, जो शरीर को काबू में न रख लेने के बराबर की होगी। हर ४५ दिनों में एक बार उनके 'ब्रीतिंग' में परिवर्तन होगा। इस की निगरानी आवश्यक है।

७. मोटे शरीरवाले इस के लिये नालायक है। अगर वे बढती पावें; तो 'ट्रीटमेंट्स्' देने की ताकत(उनको) दूँगा। वे 'ट्रीटमेंट्स्'(उस केलिये) सफल बनेंगे।

८. लेकिन सि.वि.वि. कहकर प्रार्थना करके बढती पाये मीडियम्स को चुन लेना, बडी मुश्किल की बात है। ऐसे व्यक्ति को चुन लेने के बाद, उनको मैं सूचनायें दूँगा।

११.१० ए.एम. एम.टि.ए. १५.११.१९११

## ११. सि.वि.वि.जी का साहित्य (अंग्रेजी में)

| | |
|---|---|
| १. मास्टर नोट्स भाग.१ | रू.२५.00 |
| २. मास्टर नोट्स भाग.२ | रू.२५.00 |
| ३. मास्टर नोट्स भाग.३ | रू.२५.00 |
| ४. मास्टर नोट्स भाग.४ | रू.१00.00 |

(बडे आमुख के साथ):-

| | |
|---|---|
| ५. 'प्लानटरि लीडिंग्' नोट्स | रू.२५.00 |
| ६. मास्टर जी की दैनिकी | रू.१५0.00 |
| ७. महात्मा 'लेटर्स' भाग:१ | रू.१00.00 |
| ८. महात्मा 'लेटर्स' भाग:२ | रू.१00.00 |
| ९. महात्मा 'लेटर्स' भाग:३ | रू.१५0.00 |

## आंध्र(तेलुगु)भाषा में श्री वेटूरि प्रभाकर शास्त्री जी की रचनायें

१. प्रज्ञा प्रभाकरमु रू.२०.००

२. प्रवचनालु रू.२०.००

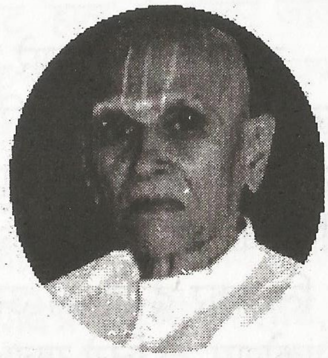
## 'सी.सा.' की रचनायें

३. भृक्त रहित तारक राजयोगमु रू.५०.००
(प्रश्नलु-समाधानालु)

## २०. सर्वाधिकार सुरक्षित(कापि रैट्स)



## २१. और ज्यादा समाचार जानना चाहते हो तो-



ए.वि. श्रीनिवासाचार्युलु (सी.सा.)
मास्टर् सि.वि.वि. योग सेंटर्-ब्रांच
श्री प्रभाकर मित्र मंडलि
नें.१२. रामुलवारि उत्तर माड वीथी,
तिरुपति -५१७ ५०७. चित्तूरु जिले.
आंध्रप्रदेश्.(इंडिया)
दूर वाणी :✆:+91(0)877 222 8814.
वेब सैट : www.mastercvv.org.
इ-मेयिल: avsacharyulu@mastercvv.org.(or)
webmaster@mastercvv.org, (or)
avsacharyulu@rediffmai.com.

# गुरुदेव श्री वेटूरि प्रभाकर शास्त्री जी

श्री गुरुदेव वेटूरि प्रभाकर शास्त्री जी ने आंध्रप्रदेश के 'पेदकल्ले -पल्लि' में दि.०७.०२.१८८८ संवत्सर सर्वजिन्माघ बहुला एकादशी ज्येष्ठा- चतुर्थ चरण मध्याह्न लगभग १२ बजकर १० मिनिट पर जन्म लिया।

वे कई व्याधियों से पीडित हुए। उस समय के मदरास के सुप्रसिद्ध अंग्रेजी व आयुर्वेद चिकित्सकों से चिकित्सा ली। (स्वास्थ्य न मिला)

अंत मे उन्होंने यों निर्णय कर लिया:-

''पुनः घर लौटने से शवप्राय जीवन बिताना होगा। हाथ में जितने पैसे हैं, उनसे हरिद्वार केलिये टिकट खरीद लेना चाहिये।(सिर्फ टिकट के लिये काफी पैसे थे।) यात्रा में उपवास ही करूँगा। बिना माँगे किसी से जो कुछ भी मिल जाय, खा लेना। महाप्रस्थान करके 'गंगा माई' की पावन गोद में समा जाऊँगा।''

तब एक दिन हमारे गुरुदेव(श्री अब्बूरि जगन्नथ राव जी के बहनोई) पोतराजु नरसिंहं पंतुलु जी ने(मीडियम नं.१२३, भृ.र.ता.राजयोगं में प्रवेश ता.३०.१.१९१४) एकाएक मुझ से मिलकर मेरी अस्वस्थता की हालत जानकर तुरंत श्री मास्टर जी के नाम एक पत्र लिखकर दे दिया। उस पत्र के साथ उसी दिन शाम को ही 'कुंभकोणम' के लिये यात्रा की। रेल में मैं यों सोचने लगा।-

''मुझे लग रहा है कि मैं हरिद्वार के बजाय 'आरोग्य द्वार' पर पहूँच रहा हूँ।'' कुंभकोणम में श्री सि.वि.वि. जी के यहाँ पहुँचा। ता.२२.६.१९१६ प्रातःकाल श्री सि.वि.वि. जी के दर्शन हुए।

श्री शाश्त्री जी, मास्टर जी का वर्णन यों करते हैं-

''न मोटे न पतले, न नाटे न लंबे, सुनहली अरुणोदय शोभा से प्रकाशमान श्रीमान जी के दर्शन होते ही मेरा शरीर रोमांचित हो उठा। दोनों हाथ जोडकर प्रणाम कर के पत्र समर्पण कर दिया। उन्होंने उसे पढकर दरहास पूर्वक आदेश दिया-

''स्नानादि से निवृत्त होकर थोडी देर के लिये आराम कर लो''

मास्टर जी से मेरी परिस्थिति के बारे में विनयपूर्वक सुनाने पर वे बोले- ''अब तुम्हारे स्वास्थ्य का भार मैं ने, अपने कंधों पर रख लिया। डरो मत। सब लोगों के बराबर नित्य का भोजन कर सकते हो, जिससे तुम्हें कोई हानि न होगी।''

उस दिन सायं छः बजे मुझे श्री मास्टर जी ने अपने शिष्य के रूप में अनुग्रह प्रदान किया।(योग साधना में प्रविष्ट होने की तिथी. २२.६. १९१६, मीडियं संख्या.३३०)

श्री मास्टर जी को दंडवत-प्रणाम करके अपनी अभ्यर्थना सुनायी। उन्होंने उपदेश देकर 'तुम झट 'हाल' के भीतर जाकर शवासन में लेटकर उपदिष्ट को केवल एक बार ही उच्चारण-स्मरण-करके आँखें बंदकर अपनी अंतर में चल रही प्रक्रिया पर ध्यान लगा लो; यदि तुम्हारा मन बहिर्मुख होकर भटकता हो, तो उसे जाने दो, मत रोको। बस इतना ही तुम्हें करना चाहिये, कुछ 'मिनिटों' तक आँखें खोलने का प्रयत्न मत करो। तुम यदि प्रयत्न भी कर लोगे, तो भी साध्य न होगा। खुलने पर भी पुनः आँखें बंद ही हो जाती हैं। देह के भीतर जो कुछ प्रक्रिया होनी है, उसके पूर्ण होने पर ही आँखें अपने आप खुल जाती हैं। उस के बाद आँख बंदकर सोना चाहो, तो तकलीफ होगी।''

मैं उसी प्रकार उपदिष्ट(उपदेशित मंत्र) को एक ही बार सार्थक रूप में स्मरण करके, बोलकर आँखे बंद करके लेट गया।

ऐसा दृश्यमान हो पाया था:- "साथ ही मेरे अंदर कोई महान प्रज्ञा प्रवेश करके झकझोर रही हो। उत्साह तथा मनोरंजन के साथ उसी का परिशीलन करने में लग गया था। प्रज्ञा है या और निर्देशित क्या चीज है, पता नहीं एक अपूर्व अनुभूति मेरे भीतर जोर पकडे लपट लगा गयी थी। मैं यह खोजने लगा था कि अंदर क्या हो रहा है? वह देह के चमडे के भीतर व्याप्त होता-सा लगता था, पर उसका प्रारंभ कहाँ से होने लगा-यह पहचाना असंभव लगता था। देह के भीतर कोई अद्भुत 'इंजन' के चलने की प्रक्रिया-सी लग रही थी। मेरा मन आनंद और उल्लास से हिलोरें मार रहा था।" श्री मास्टर जी के समक्ष होकर मैं ने उपर्युक्त सारा अनुभव कह सुना दिया। मास्टर जी ने मुस्कुराते हुए कहा 'संतुष्ट रहो'।

दूसरे दिन मैं ने प्रातः उठकर हाथ, मुँह धोकर योगानुभूति के लिये अपने को तैयार कर लिया। पूर्व दिन शाम को उस गाँव के कई साधक आये हुए थे। वे सब सबेरे भी आये।

'राधाकृष्ण पिल्लै', और 'महदेवय्यर', मास्टर जी के दो प्रधान शिष्य थे। उन्होंने मेरे बारे में श्री मास्टर जी से विनती की थी। उस समय मास्टर जी ने उनको आज्ञा दी-'मेरा 'टेस्ट' लिया जाय।'

प्रातःकाल ठीक नौ बजे सत्रह मिनिट पर वे अपना रिपोर्ट लिखने जुटे गये। तब पिल्लै जी ने आँखें बंदकर अपनी अंतरदृष्टि को जो दिखाई दिया और अंतर कर्णेंद्रिय को जो सुनाई पडा, उसे बताते जा रहे थे। उस में मेरे शरीरांतर्गत स्वास्थ्यास्वास्थ्य, मनोभावनायें, अनारोग्य के कारण, और उसके दूर करने के उपाय; अब तक मेरे

जन्मजन्मांतर विषय वगैरह थे। वह सब-कुछ समाप्त होने पर उन्होंने श्री मास्टर जी को सभी विषय सुना दिये। उनकी ही सम्मति पर उसे 'रिकार्ड' किया। उस समय योगाभ्यास हेतु आकर शिष्य बनानेवाले सभी लोगों को उस प्रकार का 'टेस्ट' लिया जाता था। मेरे बारे में तैयार किये गये 'रिपोर्ट' की प्रति-लिपि मैं ने पूछ ली । उन्हों ने मास्टर जी की सम्मति पाकर मुझे उसे दे दी। वह अब भी मेरे पास है।

भोजन के बाद मैं ने मास्टर जी के पास पहुँचकर विनती कर ली। ''तीन वर्ष से मैं घोर यातना का अनुभव कर रहा हूँ। मुझे न नींद, न भूख, न प्यास, न पाचन होता, न चित्त की शांति। यहाँ आने की इच्छा होते ही अनजान में ही स्वस्थ की तरह भोजन कर लिया था। आप की योग-साधाना की महिमा 'श्री नरसिंहं' जी के द्वारा मालूम होते ही, मुझे न जाने किसी प्रकार का दिव्य सौख्यसौध का पथ दृश्यमान हो गया था। स्वस्थ मन से मैं आ सका।

पहले तेज दवाएँ ले लीं। तब से ऐसा लगता था- मानों पेट ही उबला-जला- हो। आज वैसा नहीं।

मैं तो चाहता हूँ कि संप्रति, आप का सेवक बनकर यहीं रहूँ।

उन्होंने पूछा कि 'अब तुम्हारा वेतन कितना है?' मैं ने कहा '५० रूपये'। तब मास्टर जी बोले-'उस से तुम अपने परिवार का भरण- पोषण कर सकते हो। अपनी रोजी-जीविका- छोडकर यहाँ रहने की जरूरत क्या है?

चलती का नाम गाडी है। उसी अवस्था में उस की मरम्मत होनी चाहिये। गाडी के हिस्सों को अलग करोगे, तो गाडीवाले का जीवन दूभर हो जाता है। मेरी योग-साधना का लक्ष्य यह है- ''लागू

काम को रोके बिना, तृटि को सुधारना चाहिये, मेरा योग-मार्ग वैसा है। यह निवृत्ति का पथ नहीं है। राजयोग का पथ है। गृहस्थ जीवन अवश्य चाहिये। किसी भी व्यक्ति को सन्यासी न होना चाहिये। सुखमय जीवन व्यतीत करते, खान-पान सही और ठीक तौर से लेते रहे।

ऐसी परिस्थिति में तुम्हें अपनी रोजगारी से संबंध बनाये रखना अत्यंत आवश्यक है। तुम्हारे रोजगार से केवल तुम्हारे जीवन-यापन ही नहीं; बल्कि संसार की भी भलाई होती है। प्रत्येक आदमी स्वार्थ-वश कार्य संभालता है। वह संसार का भी मददगार होता है।

तुम्हारे यहाँ पर रहने की इच्छा, केवल मेरे सन्निधि-लाभ-प्राप्त करने के लिये ही है न? मैं तो सदा तुम्हारी ही अंतरात्मा में निवास कर लेता हूँ। तुम्हें जो सहायता चाहिये, वह तो तुम्हारे भीतर से अनायास प्राप्त होता ही रहता है। जिस प्रकार शारीरक संस्कार का बोध तुम्हें हो पाता है, उसी प्रकार तुम जहाँ भी क्यों न रहे हो, साधना की अनुभूति स्मरण हो पाती है। प्रातःकाल की योगसाधना का प्रभाव शरीर पर पडकर संध या तक क्रियाशील रहता है। जब-जब कितनी साधना होनी चाहिये, उतनी सदा होती ही रहती है। जब-जब जितना तुम्हारे लिये आवश्यक होता है, उतना मिलता है।

तुम्हारे भीतर संस्कार पथ पर चलानेवाली शक्ति प्रज्ञाकलित चेतना ही है, जडता नहीं है। वह बिजली की भाँती काम नहीं करती है। क्यों कि विद्युत् तो बेहद, बेजरूर उपयोग में लाने से हानि ही संभव होती है। यदि तुम अपने भीतर इस नयी प्रज्ञा-शक्ति को जरूरत से ज्यादा(अत्यधिक) उपयोग में लाना चाहो, तो वह असंभव बात होती है। जितना प्रभाव चाहिये, उतना ही प्रदर्शित होता है। जान-

बूझ कर या तुम अवश्यकता से अधिक समय तक आँख बंद करना चाहते तो भी न रह पाते। भीतर आवश्यक प्रक्रिया जब तक चलती रहती है, तब तक तुम अपनी आँखें न खोल सकते।

यात्रा में, रेल या बस में, पैदल चलते, और भी अन्य कामों में रहने पर भी ठीक समय पर एक क्षण के लिये ही क्यों न हो, मन में स्मरण करना काफी है, कार्यप्रणाली के समाप्त होने पर आराम करते समय जो कुछ होना है, होता ही रहेगा।

विवेक, सत्य, तथा धर्म के प्रति ध्यान लगाते हुए अंतरात्मा की आराधना करते हुए भीतर ही भीतर घुस जाने पर तुम्हारे लिये आवश्यक उद्बोधन मिल ही जाते हैं। उसी प्रकार के उद्बोधनों का स्रोत भी धीरे-धीरे तुम पहचान सकोगे।

पहले पहल तो तुम्हारी दृष्टि स्वास्थ्य-लाभ के प्रति प्रसरित हो रही हैं। बस, तुम्हें परमार्थ के प्रति उत्सुक होना काफी है। योग साधना तो खाली पेट नहीं करनी चाहिये। कुछ न कुछ नास्ता करके ही प्रार्थना करनी है।' इस प्रकार मास्टर जी ने समझाया।

कुछ समय पश्चात् जब मै कुंभकोणम फिर गया हुआ था, तब श्री मास्टर जी ने मेरे पूछे बिना यों कहा-'मेरे शिष्यों में कोई भी दुनिया-आम लोगों- से भिन्न निराला-सा दीखनेवाली वेष-भूषा-पहनाव-, आचरण रखना न करें। वह साधारण जनता को अच्छा न लगेगा, अतः वे(साधक) मामूली ही रहें। अतः इस योग में अकेले तो कोई सफल न होगा। मानव अपने प्यार पहले अपने से लेकर, पुनः अपने आसपासवालों को उसके बाद दोस्तों में बांटता या व्याप्त करता है, तथा भलायी-कल्याण चाहता है, वैसे ही इस योग के द्वारा भी सभी पर प्यार दिखाकर सभी के उद्धार की इच्छा रखनी चाहिये।

अपने प्यार को सर्वव्यापी बनाये बिना कोई उन्नति-उद्धार-न पायेगा। अखंड व सर्वव्यापक उस तत्व को पाने के लिये(साधक को भी) स्वयं अखंड एवं सर्वव्यापी बनना है। देश, जाति, पांति के भेदों में पडा व्यक्ति जनता से अपनापन न जुडा सकनेवाला है। प्रापंचिक बंधनों से जन्म भर छुटकारा पा न सकेगा। हमें बाहरी विभिन्नता को चालू रखते हुए ही, आंतरिक क्षेत्र में प्राप्त होनेवाली एकता को पहचान कर आचरण में रखना ही प्रस्तुत योग-साधना का एक नतीजा है। हमारी परिपूर्णता भविष्य में ही है, न कि वह भूत बना। इसलिये भूत की नींव(आसन पर बैठ) पर भविष्य के परमार्थ (का फल) भोगना है।

उन्होंने और एक समय यों कहा-"यदि आप लोगों को कोई शंका होती है, तो स्वयं ही निवृत्त कर लेने के बदले, उनके बारे में मुझे पत्र द्वारा लिखने या पूछने का प्रयत्न न करें। यथाशक्ति उनका समाधान अपने आप ही खोज लीजिये। जब कोई समाधान न सूझ पडता हो, तभी मेरी सलाह पूछें। अधिकतर कठिन समस्या के होने पर ही मुझ से पूछिये। न्याय व संगत प्रश्न के उठने पर, उस प्रश्न के स्तर के अनुसार ही प्रयत्न कर लेते, तो समाधान अवश्य प्राप्त हो जाता है। उस प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने का प्रयत्न बहिर्मुख रूप में हो तो, पुराने ग्रंथों द्वारा या आप को अभिज्ञ मालूम होनेवाले आप्तों के द्वारा मालूम कर सकते हैं। अगर अंतर्मुखी हो, तो आत्मबोधक रूप हो पाता है। अतः यह नया योग वैसे आत्मोद्बोधन के लिये ही है।

प्रश्न का समाधान बाहरी ग्रंथों वगैरह से पाना चाहते, तो 'अनंत शास्त्रं बहुवेदितव्यं' की सूक्ति के अनुसार वे शास्त्र और उनके प्रणेता कई भेद के हैं। ऐसी हालत में किसे लेना? तब इस के लिये फिर

आत्मोब्दोध का ही सहारा लेना पडेगा। 'घट्टकुटी प्रभात न्याय' के अनुसार सभी को आत्मोद्बोध के अनुयायी बनना पडेगा और बनेंगे भी। अतः बाहरी विज्ञान का सहारा लेकर अंतरात्मा के उद्बोधन को पा सके, तो परमार्थ की प्राप्ति सुगमता से होगी।

मैं योग साधना के बाद राम जाप की भाँते कुछ समय तक ध्यानमझ हो गया था। तब मुझे अनुभव हो पाया कि सारी देह में आग की लपटें निकल रही हों। उसी को मैं ने मास्टर जी को कह सुनाया।

उन्होंने सलाह दी कि- "नियमित समय में ही मेरे अनुष्टान करना चाहिये। जाप कभी नहीं करना। यदि कोई आवश्यकता हो, तो तब क्षण मात्र के लिये स्मरण करने से आवश्यक सुविधा हो पाती है। परतत्व बहरा नहीं है। अतः मत रटो। मुँह से निकली बात कान के सुनते के समान, आप की अभ्यर्थना परतत्व सुन सकता है। जब एक दफे की प्रार्थना से अनुग्रह देने वह तैयार है; तब बार-बार माँगना क्यों?

टेलिफोन में एक बार बुलाने पर, दूसरी ओर से तक्षण समाधान प्राप्त हो जाता है, तो उसे अनसुनी करके बार-बार पुकारने के बराबर का है-नाम का रटना।" ई.१९२५ के आसपास एक मित्र निरंतर श्री मास्टर जी का नाम स्मरण राम-जाप की भांती करता रहा। कुछ दिनों के बाद सारे शरीर में आग ज्वाला- सी धधक उठी थी।

उस से जो कुछ भूल हुई थी-उसका पश्चात्ताप करके; उसकेलिए क्षमा प्रार्थना पूर्वक सक्रम विधि के अनुसार चलने का नियम बना लिया, तो उसका स्वास्थ्य सुधर गया था।

घर आने के बाद एक सप्ताह में ही मेरे नाम दफतर से तार आया- 'तक्षण तुम्हें तंजावूर ग्रंथालय के परिशील कार्य में जाना और वहाँ पर पहुँच कर काम करना होगा'।

तब मदरास आकर दफतर गया। फिर तो मदरास में न रुक कर कुंभकोणं चल पडा।

श्री मास्टर जी ने कहा-''हर सप्ताह छुट्टी में तंजावूर से कुंभकोणम आया करो।''

उस समय रेल का टिकट आठ आने से भी कम था। वैसे ही मैं आता-जाता रहा।

१९१६ की क्रिसमस की छुट्टियाँ आईं थीं। उस समय, मैं श्री मास्टर जी की सन्निधि में था। ३१.१२.१९१६ के दिन जुलाबों से (दस्त) से पीडित होने पर कमजोर हो गया।

मास्टर जी को मेरी हालत मालूम हो गयी, तो 'रामचंद्रय्यर' नामक मुख्य शिष्य को बुलाकर कहा-''प्रभाकर को 'विगर सप्लै' का 'ट्रीट्मेंट' करो'' तब उन्होंने, लेटे हुए मेरे पास आकर, उस आदेश के अनुसार 'ट्रीट' किया। पाँच ही 'मिनिटों' में मैं उठकर सीधे खडे होकर इधर-उधर घूमने के बाद दौडने लायक उत्साह तथा शक्ति-संपन्न हो गया।

मै ने श्री मास्टर जी के चरणों में दडवत् प्रणाम किया।

''रेल का समय हो रहा है। फौरन तुम्हें ष्टेषन जाना होगा-'' वे बोले ''आज से अस्वस्थता न रहेगी। हर सप्ताह मेरे यहाँ आने की आवश्यकता भी नहीं है। दो दिन की छुट्टी होने पर आ जाओ। प्रातःकाल तथा मध्याह्न में लघु आहार ही ले लो। हाजम ठीक रहेगा। लिवर

ठीक हो गया है। रात्रि के समय छांछ के बजाय दूध का भोजन कर लो।'' मैं तंजावूर आ गया।

और एक दफा मास्टर जी ने मुझे बुलाकर यों कहा- ''मेरी योग साधना के कमरे में, मेरी बेंच पर, आज रात तुम, अपनी पत्नी के साथ लेट जाओ। इन दिनों मैं यहीं पर लेट रहा हूँ।'' मैं ने तो लज्जा से थरथराते अंगीकार सूचना में सिर नवाया। किन्तु मुझे उस के बाद अत्यंत भय होने लगा- ''वह तो कि श्री मास्टर जी का शयन- कक्ष था। और भी तो वह बेंच उनके आरामकर लेने का साधन था। उस पर मेरा लेटना क्या? और भी अपनी पत्नी के साथ..!'' यों सोचकर मैं काँप उठा था।

मास्टर जी घर के अंदर के बडे चौक में मच्छरदानी से घिरे रैवंची खाट पर, पतले बिस्तर पर लेटे हुए थे। वहाँ नील असमान में चाँद-तारे दिखाई दे रहे थे। खाट के उपर और नीचे चमेली-फूल छितराये हुए थे। तकिया रेशम का था। वे रेशमी महीन चादर ओढे हुए थे। वे उठनेवाले ही थे कि, मैं ने उनके चरण छूकर प्रणाम किया। तब मास्टर जी ने पूछा- ''कहाँ सोए?''

मैं बोला- ''मेरी पत्नी अन्य महिलाओं के साथ घर में सोयी, मैं तो दहलीज के पासवाले चबूतरे पर।'' तब मास्टर जी ओंठ बिचवाकर यों बोले- ''तुम ने मेरे आदेश का पालन न किया।'' मैं ने शरम से सिर झुका दिया। तब वे फिर बोले- ''हाँ, जाने दो, और क्या बात है?

तब मैं ने कहा- ''मेरे माता, पिता बडी उम्रवाले हैं। न जाने कब क्या होगा? उन्हें आप का शिष्यत्व प्रदान कीजियेगा। वे तो यहाँ पर भी न आ सकते हैं। 'उन की क्या उम्र है?'

'हमारे पिताजी की उम्र ७७ हो गयी है। ''उतनी बडी उम्रवालों के बारे में इतनी तत्परता का प्रदर्शन कर रहे हो। तुम्हारे साथ जीवन पर्यंत सफर करनेवाली पत्नी के बारे में पूछते क्यों नहीं? अच्छी बात है। किंतु आज ८ बजे तुम्हारी पत्नी को 'इन्सियेषन' संपन्न होनेवाला है। उस की तैयारी कर लो। 'फारम' आदि को भर लो।'' यों कहकर मास्टर जी उठकर भीतर चले गये थे।

८ बजे 'इन्सियेषन' का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पुनः गुरूजी से भेंट करके अपनी इच्छा- माता-पिता के बारे में, मैं ने जाहिर की।

''अब तो उनके शरीर चिरकाल तक सुरक्षित नहीं किये जा सकते हैं। फिर भी तुम पीछे लग गये हो, सो बतला रहा हूँ। यदि तुम योग सिद्धवाले पुरुष बनोगे, तो 'दश पूर्वेषां दशा परेषां' के अनुसार तुम्हारे वंशज तुम्हारे योग-प्रभाव से उबार कर देह-परित्याग कर लेंगे। १० वर्ष तक मेरे आदेश के अनुसार तुम्हें योग-साधना निभा लेनी होगी। अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति तुम्हीं अपने आप कर सकते हो। संप्रति तुम्हारे माता-पिता को वहीं रहने दो। मेरे उपदेश काम में लाओ।'' यों कहकर कर्तव्य-बोध करा दिया था। मैं तो हर्ष से फूला न समाया था।

मैं दस साल बाद ही पहुँचे हुए-माने-साधक हो सका। तेरह वर्ष के बाद ही अनुभूति पूर्वक योग के सारे रहस्य मुझे मालूम हुए।

श्री मास्टर जी देह-त्यागनेवाले थे कि एक 'नाडी शास्त्र पढनेवाले' से मास्टर जी ने यों पूछा-''नाडी ग्रंथ पढते समय तुम यथार्थ विषय को ही लिखना तथा पढना जारी करते हो न? या

अपनी कल्पनायें जुडाते हो, क्या?''

कहा गया है कि उसने अपनी तरफ से एक कल्पना की थी। श्री मास्टर जी ने यह चेतावनी दे दी कि कभी भी इस प्रकार का काम मत किया करो। उन(नाडी) किताबों को लेकर बांधकर टांड-मचान-पर छिपा दिया। आदेश दिया कि ''आगे 'नाडी' मत पढें।''

''नाडी को परम प्रमाण मान कर तुम्हें न पढना, न सुनाना चाहिये। तुम नाडी के कारण मेरे शिष्य बने नहीं। मेरे शिष्य होने के बाद ही तुम लोगों ने नाडी देखने का अभ्यास कर लिया है। जिस कारण से तुम मेरे शिष्य बने थे, उसी कारण से मेरे अनुयायी बनना चाहिये। मेरे उपदेश 'स्वतःप्रमाण' है। न कि 'परतः प्रमाण-(याने, दूसरे शास्त्र या व्यक्तियों की बातें को लेकर सिद्ध करना।) मुझे और मेरे आदेशों को, नाडी ग्रंथों को लेकर यकीन-सिद्ध-करने का प्रयत्न मत करें।

मेरे योग पथ के परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना किसी को भी संभव न होगा। क्यों कि वह तो, ऐसी साधना है कि वह मुझे भी एक साथ-एक बार ही नहीं; समय-समय पर; ज्ञात होती रहती है। वह साधना ऐसी है कि जैसे बरगद के पेड की शाखाएँ और डालियाँ चारों तरफ बढती हैं, ऐसी हालत में कौन कह सकेगा कि वह पेड किस शाखा को किधर, कब बढायेगा? उसी प्रकार लोकतंत्र एवं विशेषतः इस योगतंत्र का विकास होगा। जैसे-जैसे मानव की पहुँच ईश्वरत्व के समीप-समीप की होती, वैसे-वैसे उसे समझ पायेगा।

वृक्ष शास्त्र-विज्ञान से(आज-कल) कुछ वृक्षों के बारे में बताया जा रहा है कि वे कितने दिनों में कितने पत्ते, कितनी डालियाँ, कितने फल-फूल लगायेंगे? मानव-प्रज्ञा की बढती के साथ-साथ परतत्व

के निकट होते-होते सर्व प्राणि(कोटि) का, सृष्टि-रहस्य का ज्ञान मानव को प्राप्त करने की संभावना है।

जब तक मानव हृदय निर्दुष्ट-बिना बुरे का न हो, जब तक मानव की वाणी सुपवित्र न होगी, जब तक मानव के काम-काज विनिर्मल न हो, तब तक सृष्टिरहस्य मानव की समझ में न आयेगा। प्रयत्न हो रहे है।

यदि आप लोग इन नाडी ग्रंथों के पीछे पडेंगे, तो आप के भीतर वाली प्रज्ञोद्बोध शक्तियाँ कुंठित हो जायेंगी। प्रज्ञोद्बोध का अनुसारण करते हुए बाह्य शास्त्रादि साधन-संपत्ति को तजना चाहिये। अंत में आत्मानुभूति से विलसित होना संभव हो पायेगा। आप को तो देखना इस ताडपत्रवाले 'नाडी' शास्त्र नहीं; देखना है- 'आप के अंदर में विलसित चैतन्य प्रेरित चलती नाडी को', अतः ताडपत्रों की नाडी-पुस्तकों को जल्दी बंदकर योग-साधना की ओर तात्परता से जुट जाओ।

## श्री शास्त्री जी का महत्व क्या है?

१. मास्टर सि.वि.वि. जी से परिचय प्राप्त कर लेना- डैरेक्ट मीडियम होना
२. श्री मास्टर जी से सीधे ही वार्तालाप प्राप्त कर लेना-
३. सोसइटी के 'सूपरिंटेंडेंट' श्री 'एस. सुंदरं जी' की अनुमति के बिना ही सि.वि.वि. जी के दर्शन प्राप्त कर लेना-
४. हर रविवार को तंजावूर से अपने यहाँ आने केलिए सि.वि.वि. जी के द्वारा आदेश पाना-
५. श्री सि.वि.वि. जी का अपने उपयोग की बेंच पर ही, पत्नी समेत शयन करने के लिये आदेश पाना-

६. मास्टर सि.वि.वि. जी से प्रभावित अमृततुल्य वाक्यों को हमें सौंपना-

उपर्युक्त योग्यता-प्राप्त भाग्यवान हैं- 'गुरुदेव श्री वेटूरि प्रभाकर शस्त्री जी।'

कुंभकोणम पहुँचने का मार्ग:-

मदरास से कुंभकोणम के लिये बस सेवा उपलब्ध है। कुंभकोणम शहर में प्रविष्ट होते ही 'मलयपाल्यं' बताने पर, वहाँ उतरकर जा सकते। वहाँ से १०० गज की दूरी पर 'कील डबीर तेरु(ईष्ट डबीर स्ट्रीट)' नामक मार्ग में हमारा प्रार्थना-गृह; मुहाने पर ही है।

''मास्टर सि.वि.वि. योग स्कूल-कालिज-यूनिवर्सिटि'' नामक बोर्ड अंग्रेजी-तेलुगु-तमिल भाषाओं में लिखा मिलता है

उस घर की अपनी कक्षा में ही, मास्टर जी ने २२ वर्ष पर्यंत प्रार्थना कर ली थी।

रेल मद्रास-एग्मूर से निकलाती है।

'मोटर कार' पर आनेवालों को मदरास-चंगलपट्टु-दिंडिवनम-विल्लिप्पुरम- के प्रारंभ के पूर्व ही एक पुल आता है। उसे पाकर लेने पर 'तंजावूर' नामक 'बोर्ड' दिखाई देता है। वहाँ पर-बाये हाथ की ओर मुडकर नैवेलि-वडलूर-शेतियातोपु मार्ग से आना होगा।

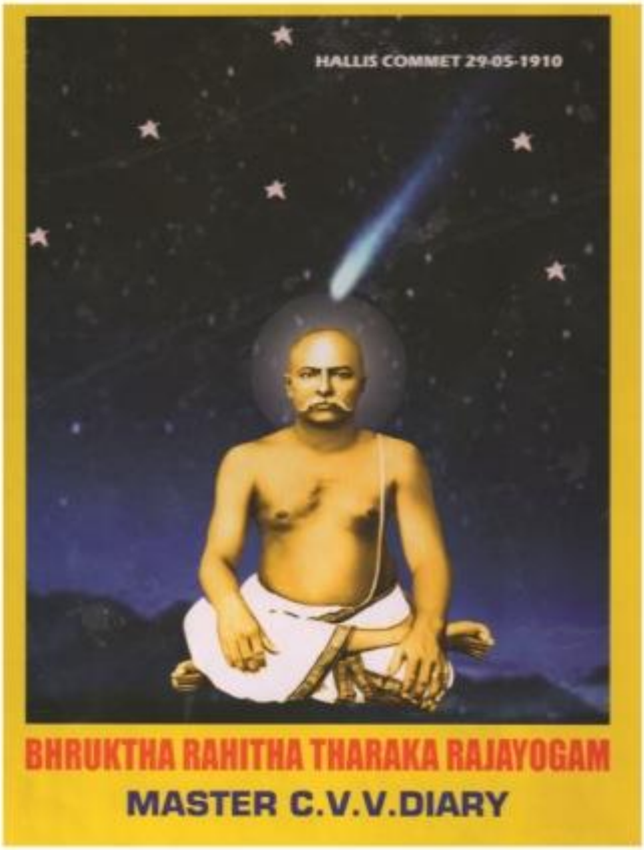
मुक्य सूचना:-
यह पुस्तक अंग्रेजी-तेलुगु-तमिल-कन्नड भाषाओं में भी मिलती है।

**44**

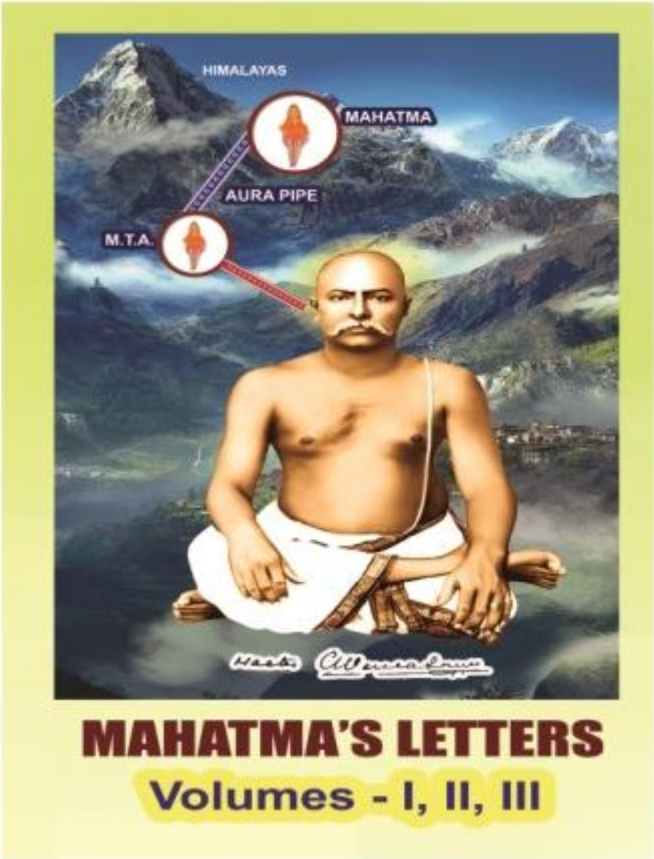
# Publications

## Books

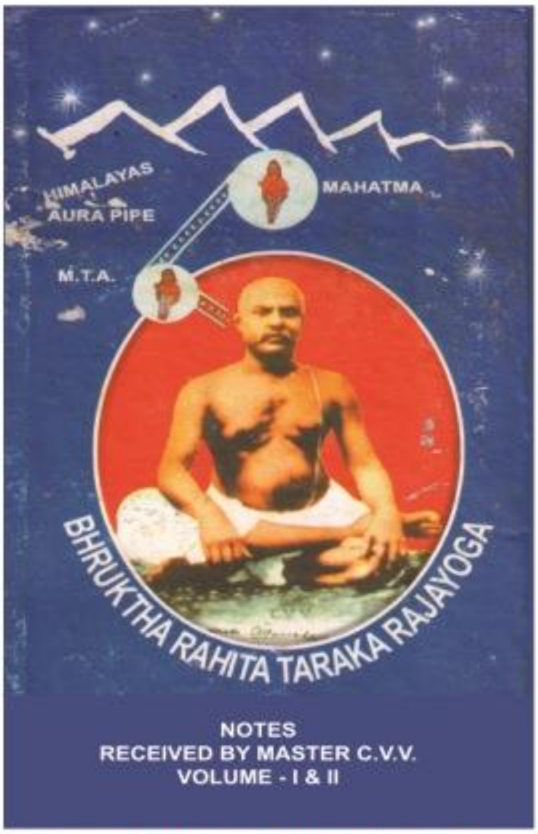
English




## Master’s Diary



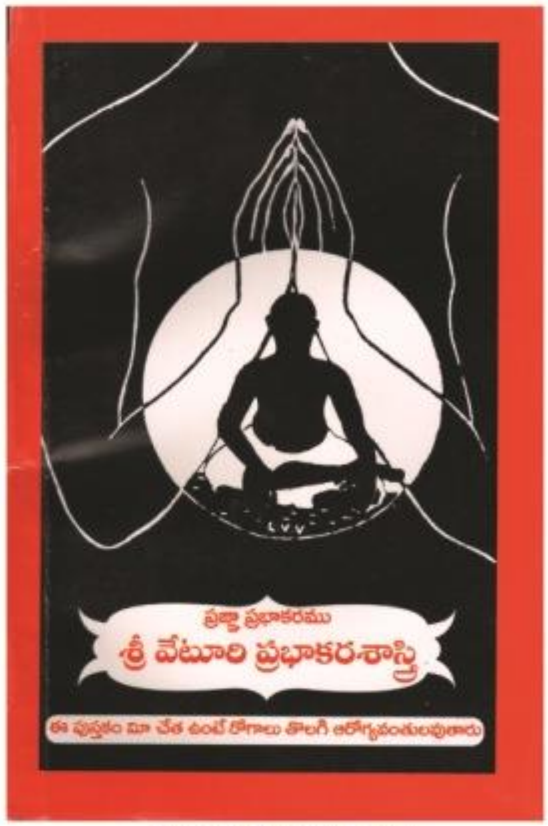

**Mahatma's Letters** (Vol.I ,Vol.II and Vol.III)




Master C V V Notes Volume (s) - I & II

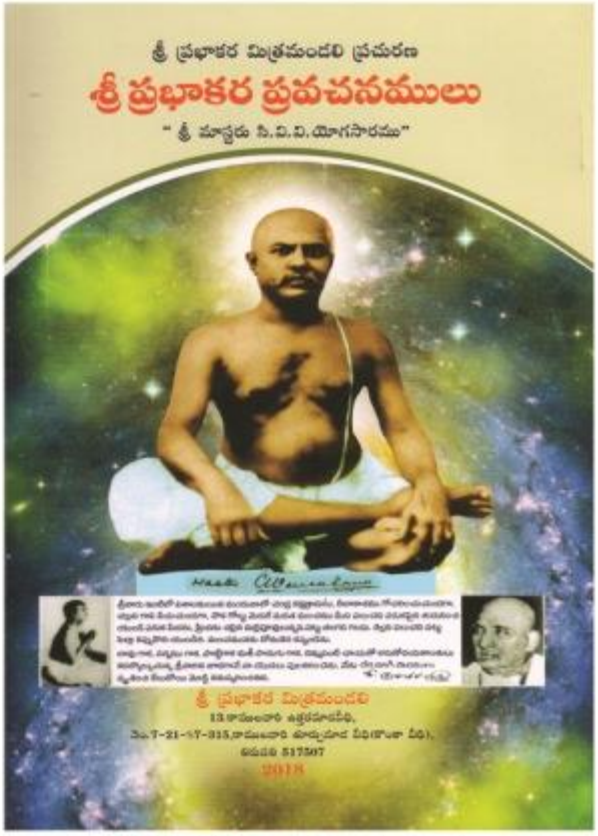
## Master Notes (Vol. I and Vol.II)
(including Planetary Leading Notes)

# Telugu



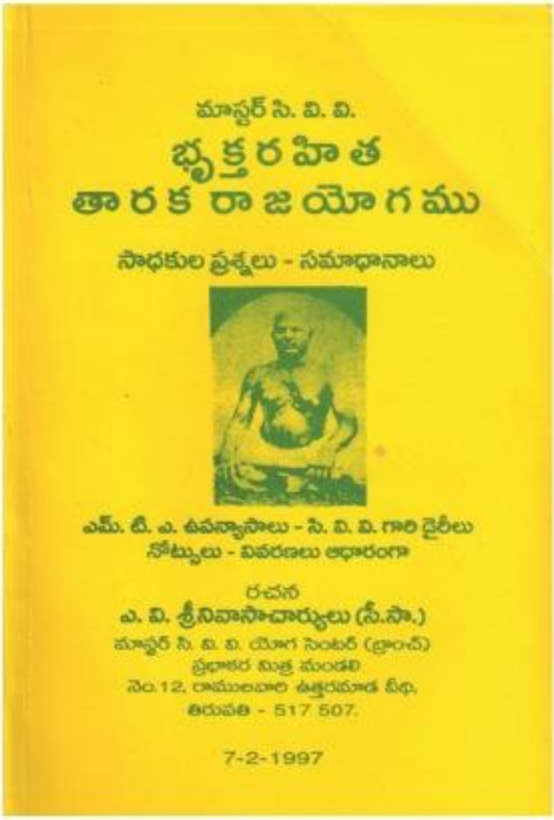

Pragna Prabhakaramu
Sri Veturi Prabhakara Sastry

## Pragna Prabhakaramu
by Sri Veturi Prabhakara Sastry garu




Sri Prabhakara Pravachanaalu

## Sri Prabhakara Pravachanaalu
by Sri Veturi Prabhakara Sastry garu

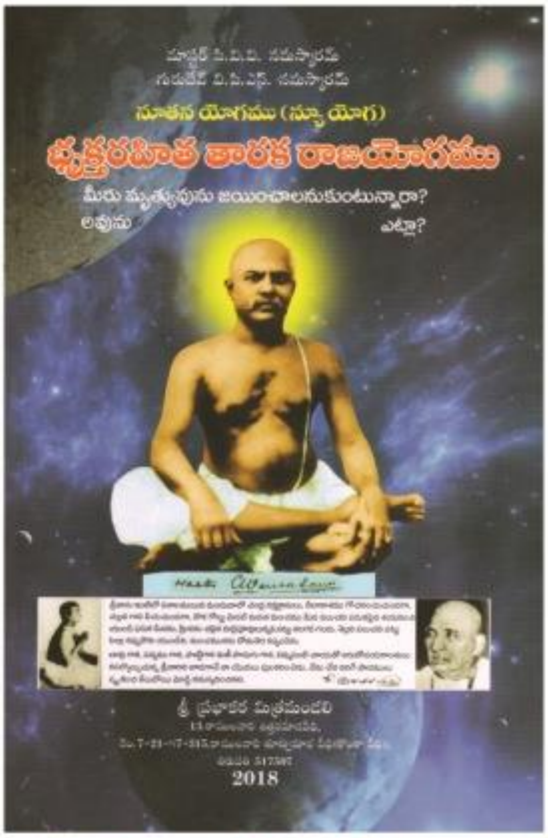



Bhruktha Rahitha Tharaka Rajayogamu
(Sadakas Questions & Answers)

## Bhrukta Rahita Taraka Rajayogamu

(Sadakas Questions & Answers)

by Sri A.V.Srinivasacharyulu garu (See Saw)




Bhruktha Rahitha Tharaka Rajayogam

# Bhrukta Rahita Taraka Rajayogamu

(Broacher – Telugu, Tamil, Kanada, Hindi, English)

by Sri A.V.Srinivasacharyulu garu (See Saw)

*For Copies :*

**M. Lakshmana Murthy** (Trustee)
Mobile No. : +91 9440046226; +91 9492695350

**Sri Prabhakara Mitra Mandali**
Master C.V.V. Yoga Centre Branch
No. 7-21-S7-315, Konka Street
Near Ramulavari East Mada Street
Tirupati - 517507, Chittoor District, A.P. India

Pragnaprabhakaram Telugu 1976 Edition : Vissa Appa Rao (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

Pragna Prabhakaram In Modern Telugu : Vissa Appa Rao (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

YOGA DARSANAM Pragna Prabhakaram Padyalu By Gurudev Sri Veturi Prabhakara Sastri : Vissa Appa Rao (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

Mani Manjari 1986 08 01 Volume No 12 Issue No Xx 188 P Andhra Bharati : Appa Rao Vissa (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

eBooks of Gurudev Sri Veturi Prabhakara Sastri archive.pdf
https://archive.org/details/frontpages_201906 [Files in XPS Format] of Hindi Edition of Pragna Prabhakaram. Parts 1 to 5. 3. https://ia801601.us.archive.org/17/items/in.ernet.dli.2015.328927/2015.328927.PragnyaPrabhakaramu.pdf [Original Telugu Edition Dte.1951August] F. You Tube Videos 1. Veturi Prabhakara Sastry

PRAGNA PRABHAKARAM VOLUME 2 : Vissa Appa Rao (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

New Yoga Bhruk Rahita Taraka Raja Yoga ( English) : Vissa Appa Rao (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

Nootana Yogamu ( New Yoga) Bhruktha Rahita Taraka Raja Yogamu : Vissa Appa Rao (Junior) : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=10213415939646462&id=1038887427

Appa Rao Vissa - Sharing with Ravi Muthuprabhakar: Re-Renovated... | Facebook

Special on SVBC TTD Official Channel. https://youtu.be/vvHpjnOaDDY SVBC TTD Gurudev VPS with Master CVV.mp4 14th January 2013 https://youtu.be/TkJOuYsKWz0 Comment: Anandamurthy Veturi 6 years ago “I like watching this video documentary as many times as possible... Particularly during this (2/12 to 2/13) 125th Birth Anniversary Year Celebrations (1888 - 1950) of Gurudev VPS. Thanks to the TTD & SVBC”. 3. MASTER CVV HOUSE @ YOGA SCHOOL AT KUMBAKONAM https://youtu.be/HLLKWS1bzmQ 4. Veturi Prabhakara Sastri garu - YouTube https://www.youtube.com/watch?v=v6E8SgDPemY Feb 06, 2017 · Talk by Dr. Veturi Sankara Sastri, Youngest Brother of Veturi Prabhakara Sastri.

